कृष्णा रेड्डी:
कई और एक

धातु की प्लेट पर एसीड एचींग और हाथ से नक़्क़ाशी कर बनाए गए कृष्णा रेड्डी के खुरदुरे और जालीदार प्रिंट, रंग और आकार बदलते रहने वाले जैविक पैटर्नों की तरह दिखते हैं।
कृष्णा रड्डी (१९२५–२०१८) को एक साथ कई रंगीन प्रिंट बनाने की 'वस्कोसिटी' तकनीक के लिए जाना जाता है। उन्होंने अपने विविध प्रयोगों के ज़रिए प्रिंट-मेकींग को विस्तार दिया और बीसवीं सदी के मध्य में इसे देश-विदेश में लोकप्रिय बनाया। 'कई और एक' प्रदर्शनी में रेड्डी और उनसे जुड़े कलाकारों के काम शामिल हैं, जिससे उनकी विरासत का पता चलता है। इसमें रेड्डी की ख़ास औपचारिक भाषा को समझने की कोशिश की गई है जो कई आधुनिकताओं से जुड़ती थी। साथ ही, यह भी कि बतौर एक कलाकार, शिक्षक और फ़ैसीलिटेटर उनकी ख़ास भूमिका कैसे दूसरे कलाकारों के लिए आगे बढ़ने का ज़रिया बनी।

१९४० के दशक के आख़िरी साल नई-नई आज़ादियों और अंतर्राष्ट्रीयतावाद के साल थे। एक तरफ़ भारत को आज़ादी मिली, तो दूसरी तरफ़ यूरोप दूसरे वश्वि युद्ध की तबाही से उबर रहा था। इससे कलाओं में व्यापक आवाजाही और लेन-देन के रास्ते खुले। रड्डी समेत कई भारतीय कलाकार स्कॉलरशिप पर पढ़ाई के लिए बाहर गए। विचारों की सरहदों के आर-पार आवाजाही हुई। इससे भारत और बाहरी दुनिया के बीच बातचीत का एक नया सिलसिला शुरू हुआ।

कला में सार्वभौमिकता के विचार का रिश्ता दार्शनिक विचारों की वैश्विक यात्रा से रहा है। ज़ेन बौद्ध धर्म, थिओसॉफ़ी (जिसे हेलेना ब्लावात्स्की ने भारत यात्रा के दौरान बढ़ावा दिया) और जिद्दु कर्ष्णमूर्ति की सीखें भारत, यूरोप और अमेरिका के लोगों तक पहुँच रही थीं। ये सारे विचार युद्ध के बाद के कला-विमर्श और अमूर्त की तरफ़ झुकाव से मेल खाते थे।

रेड्डी के काम में उस दौर के बदलावों की झलक मिलती थी। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के लिए पोस्टर बनाए और बंगाल के अकाल की तबाही को अपने काम में दर्ज किया।

कुदरत के रूप उनकी कल्पना को उड़ान देते थे – चाहे वे छोटी-छोटी कोशिकाएँ हों या विशाल ब्रह्मांडीय रूप। उनकी *जेलीफिश* कलाकृति पर मशीनी दौर का असर था, ख़ास तौर पर पहले स्पेस कैप्सूल 'स्पूतनिक' का। *डिमॉन्स्ट्रेटर्स* कलाकृती १९६८ में पेरिस में हुए विरोध-प्रदर्शनों से प्रेरित थी और *वॉयलेंस एंड सॉरो* खाड़ी युद्ध से। उनकी कला में ज़िन्दगी के अनुभवों में रचे-बसे सार्वभौमिक रूपों की खोज देखने को मिलती है। इसके पीछे शान्तिनिकेतन में उनके बिताए दिन, जीव-विज्ञान की पढ़ाई, कृष्णमूर्ति के दार्शनिक चिन्तन और नन्दलाल बोस, हेनरी मूर, जोखोमेती और दूसरे कलाकारों के विचारों से उनका जुड़ाव था।

रेड्डी ने मूर्तिकला की तालीम ली थी। इस वजह से वे प्रिंट-मेकिंग में मूर्तिकला के संवेदनात्मक नज़रिए को शामिल कर सकें। वैसे तो धातु की प्लेट महज़ कुछ मिलीमीटर ही मोटी होती है। लेकिन उन्होंने इसे "तराशकर" अलग-अलग परतों को उभारा। इससे वे अलग-अलग गाढ़ेपन (विस्कोसिटी) वाली स्याहियों को कड़े और मुलायम रोलरों की मदद से प्लेट की अलग-अलग सतहों पर लगा पाते थे। इस तकनीक की मदद से एक ही बार में कई रंग प्रिंट किए जा सकते थे। चूँकि सारे रंग प्लेट पर ही आपस में मिलते थे, इसलिए विस्कोसिटी तकनीक से बने कोई भी दो प्रिंट एक जैसे नहीं होते।

रेड्डी अंतरराष्ट्रीय प्रिंट-मेकिंग की दुनिया में एक बड़ा नाम बन गए। पेरिस का अटेलियर १७ जहाँ वे सह-निंदेशक थे, और न्यूयॉर्क का कलर प्रिंट अटेलियर जिसे उन्होंने खुद शुरू किया था, और वे तमाम जगहें जहाँ उन्होंने पढ़ाया, दुनिया भर के कलाकारों के मिलने की जगहें बन गईं।

प्रिंट-मेकिंग को अक्सर एक कमतर माध्यम माना जाता था। ऐसा इसलिए क्योंकि इसमें कलाकृतियों का आकार छोटा होता है, एक ही प्रिंट की कई प्रतियाँ बनती हैं और इसके लिए प्रयोगशाला जैसी जगह की ज़रूरत होती है। लेकिन रड्डी द्वारा बनाई गई अनौपचारिक जगहों ने इस कला को ज़िन्दा रखा।

यह प्रदर्शनी रेड्डी की विरासत को एक बार फिर सामने लाती है। साथ ही, इसमें अटेलियर १७ के कलाकारों के काम और कुछ भारतीय कलाकारों के अमूर्त प्रिंट शामिल हैं। इसके अलावा, प्रदर्शनी में उन अंतरराष्ट्रीय कलाकारों की कलाकृतियों की तस्वीरों को भी दिखाया गया है जिनसे रेड्डी की मुलाक़ातें हुई थीं। ऐसा करके 'कई और एक' प्रदर्शनी उन तमाम नेटवर्कों और अनौपचारिक अड्डों को दिखाती है जिनके ज़रिए कलात्मक अभिव्यक्तियाँ आगे बढ़ीं।

- पूजा वैष्